28–3–67 ओमशांति रात्रीक्लास

सेंटर चलाना है बहुत सहज। मुरली तो जाती ही है।सभी का आधार है मुरली पर। सीढ़ी पर समझाना ,चक्र पर समझाना। ऐसे ही भी समझा सकते हैं। शिवजयंती भारत में मनाई जाती है। भगवान ही आकर नई दुनियां स्वर्ग रचते हैं। स्वर्ग के यह मालिक थे। अभी वो कहां गये? 84जन्म तो लेने ही पड़े। अब भगवान फिर से आये हैं। राजयोग सिखा रहे हैं। वो निराकार बाप उंच ते उंच है। ज्ञान का सागर भी है।वो ही बैठ पढ़ाते हैं। समझो कि मुरली कब नहीं मिलती है तो ऐसे भी तो बैठ समझा सकते हैं। दो रोटी खाना और ईश्वरीय सर्विस करना। ईश्वर से बहुत एवजा मिल सकता है। आसुरी गुण है तो फिर इतनी सर्विस कर नहीं सकेंगे। यह अविनाशी ज्ञान रतन देखने में नहीं आते हैं।बुद्धि से समझने की चीज है। वेद–शास्त्र आदि पढ़ते हैं वो है सब भक्तिमार्ग। ज्ञान को रतन कहा जाता है। भक्ति को रतन नहीं कहा जाता है। 84जन्मों का राज समझाने से भी कल्प 5000वर्ष का सिद्ध हो जाता है। प्रदर्शनी में भी कितने आते हैं। दिन–प्रतिदिन सहज करते जाते हैं। गीता का भगवान कृष्ण देवता वा शिव परमात्मा?ऐसे प्रश्न कोई पूछ नहीं सकते हैं। गीता तो सारी दुनियां भर में मशहूर है कि कृष्णभगवानोवाच की गाई हुई है।यह कहते हैं शिव भगवानोवाच।यह सिद्ध करते हैं कि वो पूरे 84जन्म लेते हैं औ पुनर्जन्मरहित है।जज करेंगे तो समझेंगे कि गीता झूठी होने कारण ही सब शास्त्र भी झूठे हो गये हैं। लड़ाई आदि भी महाभारत वाली सब सिद्ध हो जाती है। ओम

29–3–67 रात्री क्लास– यह दुनियां बिल्कुल ही डर्टी है। बाप की श्रीमत मिलती है कि अपने को आत्मा समझो तो खुशी का पारा चढ़ जावेगा। माया है बड़ी कड़ी। समझते हुये भी कि बाप स्वर्ग का मालिक बना रहे हैं तो भी नहीं मानते हैं।माया नाक पकड़कर उल्टा कर देती है। सीधे होते नहीं। एक–दो के मालिक बन जाते हैं। उनका भी नहीं मानते हैं। ऐसे एक–दो नहीं हैं। बहुत होते हैं। बाबा तो अनुभवी है ना।बाबा के पास समाचार बहुत वंडरफुल आते हैं। माया. ....कोई को भी नाक से नहीं पकड़े।नहीं तो फिर तो ईश्वर की भी नहीं चलती है। माया के साथ युद्ध है। वो भी कम नहीं है। अच्छों2 को भी गिरा देती है। बहुत अच्छों2 को भी समझ में नहीं आता है कि यह श्रीमत है। गुप्त हे ना। तो यह शरीर देखकर शिवबाबा को भूल जाते हैं। बाबा हमेशा कहते हैं बस ऐसे ही समझो कि सब शिवबाबा ही कह रहे हैं।यह राय शिवबाबा देते हैं। फिर भी अगर नहीं चलते हैं तो गोया कि नास्तिक हैं। बाप कहते हैं मैं इनमें हूँ मेरी ही सुनो।इसमें बड़ी समझ चाहिए। बहुत भारी मंजिल है। ठिक्कर बुद्धि को इतनी उंची बाप आकर बुद्धि बनाते हैं। ना समझने कारण अपनी ही अकल उंच समझ लेते हैं। शिवबाबा कहते हैं हमको शरीर तो चाहिए ना। नहीं तो तुमको कैसे पढ़ाउं?तो समझकर तमोप्रधान से सतोप्रधान बनने का पूरा पुरुषार्थ करना चाहिए। एम ऑब्जेक्ट का सा. एक सेकेंड में कराते हैं अपने को लायक बनाकर फिर दूसरों को भी बनाना है। बाबा बार2 कहते हैं कि देही अभिमानी बनो। इसमें ही बहुत2 मेहनत है। इसलिए रोजाना पोतामेल रखेंगे तो घाटा देखकर फिर तीव्र पुरुषार्थ करने का वेग आवेगा। कृपा की बात नहीं है। इसमें तो अपनी ही मेहनत है। कहते हैं बाबा को कि बाबा हम आपको ठुकरायेंगे नहीं ,भूलेंगे नहीं ;परंतु बहुत हैं जो रूठ जाते हैं। पत्र नहीं लिखेंगे वो फिर गुस्से में आकर डिससर्विस करेंगे।फिर बाबा तो यही कहेंगे ना कि ड्रामा अनुसार इसकी तकदीर में ही नहीं था। समझा रखनी है कि मुझे बाप का बनकर मंसा,वाचा,कर्मणा सर्विस करनी है। कितने मजे की नालेज है।दुनियां भर में कोई स्वदर्शन चक्रधारी हो नहीं सकते हैं।उन्होंने तो कृष्ण को विष्णु को चक्र दे दिया है। देना तो चाहिए ब्राह्मणों को ;परंतु .....नहीं।इसलिए फाइनल जो देवतायें होते हैं उनको ही देते हैं।तुम्हारी बुद्धि में फिरता रहता है। गुप्त मेहनत बहुत करनी है। बुद्धि में आता नहीं है तो याद फिरती नहीं रहती है। श्रीमत को नामंजूर कर देते हैं तो श्रेष्ठ बनना भी नामंजूर हो जाता है। ओम।